ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

आठवीं कक्षा की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में शांति के गुणों का समावेश : एक अध्ययन

मोहम्मद काशिफ तौफ़ीक (सहायक प्राध्यापक) कॉलेज ऑफ़ टीचर एजुकेशन, भोपाल, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू युनिवर्सिटी, हैदराबाद

मोहम्मद आकिफ तौफ़ीक (सहायक प्राध्यापक) के० पी० एम० गवर्नमेंट गर्ल्स डिग्री कॉलेज औराई, भदोई, उत्तर प्रदेश
डॉ० अली हैदर (सहायक प्राध्यापक) कॉलेज ऑफ़ टीचर एजुकेशन, भोपाल, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू युनिवर्सिटी, हैदराबाद

kashifau83@gmail.com, akifgdc82@gmail.com, alihaider800@gmail.com

सार संक्षेप

शांति समाज के लिए तथा यहाँ निवास करने वाले व्यक्तियों के लिये आवश्यक है, चूँकि व्यक्ति स्वाभाव से सामाजिक होता है तथा समाज में रहते हुए विभिन्न प्रकार के धार्मिक रीति-रिवाजों एवं मान्यताओं को अपनी आस्था के अनुरूप शांतिपूर्ण ढंग से क्रियान्वित करता है | अतः शांति की स्थापना में सम्मलित पाठ्यपुस्तकों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता अतः इन पुस्तकों में ऐसे प्रकरणों को समाहित किया जाये जो बालकों में शांति के गुणों का विकास अर्थात उनमें धर्मनिरपेक्षता, भ्रातत्व भाव, स्वतंत्रता व समानता की भावना, सामाजिक न्याय, अहिंसा, तथा धार्मिक स्वतंत्रता का विकास करने में कारगर साबित हो सके |

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य आठवीं कक्षा की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में सम्मलित शांति स्थापित करने वाले तत्वों का पता लगाना है | अध्ययन हेतु नमूने के रूप में एन०सी०ई०आर०टी०(NCERT) की आठवीं कक्षा की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक ली गई | जिसका शीर्षक सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन-3 है तथा जो वर्ष 2018 में प्रकाशित हुई | गुणात्मक अनुसन्धान विधि में प्रयुक्त प्रकरण विश्लेषण तकनीकी का प्रयोग किया गया | पुस्तक का विश्लेषण करने के पश्चात जो परिणाम सामने आये उनमें स्वतंत्रता, समानता, धर्मनिरपेक्षता, नैतिकता, अहिंसा, सामाजिक अधिकार, सामाजिक न्याय आदि सामने आये जिनका

Copyright ⓒ 2020 Authors

सही ढंग से पालन करने से मनुष्य में सामाजिक सदभावना विकसित होगी जो शांति स्थापित करने का सर्वश्रेष्ठ साधन होता है |अतः पुस्तक के माध्यम से जो शांति के तत्व सामने आये हैं उन्हें यदि छात्रों में सही ढंग से विकसित किया जाये तो अवश्य ही समाज में शांति पूर्ण वातावरण होगा |शांति की स्थापना में पाठ्यपुस्तकों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता अतः इन पुस्तकों में ऐसे प्रकरणों को समाहित किया जाये जो बालकों में शांति के गुणों का विकास करने में कारगर साबित हो सके |

1. परिचय

शांति और सदभावना किसी भी देश की प्राथमिक ज़रूरत होती है |किसी भी देश के नागरिक खुद को तभी सुरक्षित तथा समृद्ध मान सकते हैं जब देश का वातावरण शांतिपूर्ण तथा सौहार्दपूर्ण होगा |हर देश की यह प्राथमिक इच्छा होती है कि उसके नागरिक शांतिपूर्ण जीवन का निर्वाह करते हुए जीवन यापन करें |भारत एक विविधता वाला देश है जहां पर अलग-अलग धर्मों के लोग अलग-अलग रीती-रिवाज एवं मान्यताओं के साथ जीवन व्यतीत करते हैं |भारत का संविधान भी अपने नागरिकों को कुछ ऐसे मौलिक अधिकार प्रदान करता है जो शांति और सदभाव को बढ़ावा देने का कार्य करते हैं |शांति से तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि नागरिक शांति पूर्ण ढंग से रहे , बल्कि इससे यह तात्पर्य है कि वह अपने व्यव्हार से ऐसी छाप छोड़े जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र एवं राज्य लाभान्वित हो सके |वस्तुतः युद्ध की अनुपस्थिति ही शांति नहीं है,वस्तुतः यह एक सुदृढ़ बंधुत्व-भावना का विकास है, अन्य लोगो के विचारों तथा मूल्यों को ईमानदारी से समझने का प्रयास है |यदि कोई देश अपने नागरिकों को यह सलाह दे कि वह क्रोध कम करे , दूसरों की भर्त्सना न करे, दूसरों के उत्कृष्ट अंश पर विश्वास करने को तैयार रहे, सहज ज्ञान और करुणा जैसे गुणों का विकास करे | ये सभी गुण शांति एवं संतोष के आधार हैं | (एडवर्ड बैटी, चांसलर मैकगिल विश्व विद्यालय, कनाडा, 26 मई 1926) |

सम्पूर्ण जगत में शांति को स्थापित करना हमारा प्रमुख कर्तव्य होना चाहिए | और जिसका उद्देश्य -

- शांति प्रिय मानव के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना |

 Copyright ⓒ 2020 Authors

- मानव जीवन में शांति के मूल्यों को समझने के लिए छात्रों को तत्पर बनाना |
- नवयुवकों में शांति के आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित करना जिससे उन्हें आंतरिक शांति या मन की शांति प्राप्त हो सके |
- छात्रों में अंतर्राष्ट्रीय सदभावना तथा भ्रातत्व का विकास करना |
- छात्रों को परिवार, देश तथा विश्व में शांति कायम रखने में उनकी भूमिका के प्रति जागरूक बनाना |

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि शांति समाज के लिए तथा यहाँ निवास करने वाले व्यक्तियों के लिये आवश्यक है, चूँकि व्यक्ति स्वाभाव से सामाजिक होता है तथा समाज में रहते हुए विभिन्न प्रकार के धार्मिक रीति-रिवाजों एवं मान्यताओं को अपनी आस्था के अनुरूप शांतिपूर्ण ढंग से क्रियान्वयन करता है | अतः ऐसी स्थिति में शांति के सम्बन्ध में विभिन्न धर्मों का क्या दृष्टिकोण है यह जानना भी आवश्यक है यथा -

हिन्दू धर्म और शांति का अर्थ - हिन्दू धर्म विश्व का प्राचीनतम एवं भारत में आस्था की दृष्टि से सबसे बड़ा धर्म है | हिन्दू धर्म में विद्यमान रीती-रिवाजों एवं मान्यताओं को इस धर्म में आस्था रखने वाले व्यक्ति श्रृद्धापूर्वक मानते हैं | इस धर्म का प्रमुख ग्रन्थ गीता है जो सम्पूर्ण विश्व व प्रत्येक व्यक्ति में शांति स्थापना की बात करती है | गीता में श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं- " हे ! पार्थ सम्पूर्ण मानवता के लिये लड़ो जिससे अन्याय समाप्त होकर न्याय का साम्राज्य स्थापित हो, यदि शत्रु को समाप्त करना चाहते हो तो ईर्ष्या करना छोड़ दो | तथा सभी को समान निगाहों से देखो, विश्व में अशांति स्वतः समाप्त हो जाएगी |" जैसा कि वृहदारयणयक उपनिषद में कहा गया है -

ऊँ सर्वे भवन्तु सुखिनः |

सर्वे सन्तु निरामयाः |

मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत ||

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ||

अर्थात सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी का जीवन मंगलमय बनें और कोई भी दुःख का भागी न बने | हे भगवन हमें ऐसा वर दो !

 Copyright ⓒ 2020 Authors

बौद्ध धर्म और शांति का अर्थ – बौद्ध धर्म अनुयायियों का मानना है कि विश्व शांति तभी हो सकती है, जब हम अपने मन के भीतर पहले शांति स्थापित करें | बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध ने कहा था " शांति भीतर से आती है, इसके बिना इसे न तलाशें " विचार यह है की गुस्सा और मन की अन्य नकारात्मक अवस्थाएं युद्ध और लड़ाई के कारन हैं | बौद्धों का विश्वास है कि लोग केवल तभी शांति और सदभाव के साथ जी सकते हैं, जब हम अपने मन से क्रोध जैसी नकारात्मक भावनाओं को त्याग दें और प्यार और करुणा जैसी सकारात्मक भावना पैदा करें | घृणा को नफरत द्वारा कभी संतुष्ट नहीं किया जाता | घृणा केवल प्रेम द्वारा ही संतुष्ट है | यह एक अनन्त कानून है "| (बौद्ध संग्रह, पाली ग्रन्थ थरावद्दीन धम्मपद पाठ का पाँचवा पद,423वा छंद) |

"चरथ भिक्खवे चरिकं, बहुजन हिताय बहुजन सुखाय लोकानु कम्पाय देव मनुस्सानं"

अर्थात भगवान बुद्ध समस्त देशना मानव समाज एवं राष्ट्र के कल्याण एवं विश्व बंधुत्व की भावना से ओत प्रोत थी | (दे० महावग्ग,23)

जैन धर्म और शांति का अर्थ – अहिंसा और सहिष्णुता जैन धर्म के दो महत्वपूर्ण सिद्धान्त हैं | वर्तमान अशांत, आतंकी, भृष्ट और हिंसक वातावरण में महावीर की अहिंसा ही शांति प्रदान कर सकती है | महावीर की अहिंसा केवल वध को ही अहिंसा नहीं मानती, अपितु मन में किसी के प्रति बुरा विचार भी अहिंसा है | जैन धर्म शुद्ध, सरल, और ईमानदार घरेलू जीवन पर जोर देते हुए विश्व शांति के लिये मार्ग प्रशस्त करता है | 23 वे तीर्थंकर पार्शवनाथ द्वारा दिए गये चार महाव्रतों– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिगृह में महावीर द्वारा जोड़ा गया ब्रह्मचर्य ये पंच महाव्रत शांति को स्थापित करने के महत्वपूर्ण स्तम्भ के रूप में विद्यमान हैं | जैन धर्म में जीव को अनन्त ज्ञान, अनन्त श्रृद्धा, अनन्त शांति, अनन्त वीर्ययुक्त तथा पूर्ण माना गया है |

इस्लाम धर्म और शांति का अर्थ – इस्लाम शब्द का अर्थ शांति तथा शांति प्राप्ति का मार्ग होता है | इस्लाम धर्म में शांति व सहिष्णुता को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है | चूँकि इस्लाम धर्म के मानने वाले अच्छाई, बुराई, और क़यामत के दिन होने वाले अंतिम फैसले पर विश्वास करते हैं उनका यह दृष्टिकोण उन्हें शांति पूर्ण जीवन जीने की शिक्षा देता है | जिसके लिए वह शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हैं | पैग़म्बर मोहम्मद साहब का यह कथन था कि हर मुसलमान को चाहे वह पुरुष

 Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

हो या स्त्री ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, भले ही उसे चीन की ही क्यों यात्रा न करना पड़े, अर्थात उन्हें कितनी भी दूर जाना पड़े | शांति के सम्बन्ध में इस्लाम के क्या दृष्टिकोण है इसका वर्णन उनकी पवित्र पुस्तक क़ुरान में स्पष्ट तौर पर किया गया है –

"मन अजल ज़ालिक कतबना अला बनी इसराइल,

अनः मन क़त्ल नफ्सा बेग़ैर नफ़्स अव फसाद फिल अर्ज़े,

फकानामा कत्लुल नास जमिआ वमन अहयाहा फकानामा अह्यन्नास जामिआ"

अर्थात हमने बनी इसराइल के लिए यह आदेश जारी किया है कि जो व्यक्ति किसी इंसानी जान को बग़ैर किसी जान के बदले, या दुनिया पर अशांति उत्पन्न करने के अलावा, किसी और वजह से हत्या करता है, तो उसने मानो सम्पूर्ण मानवता की हत्या की है और जिसने किसी इंसान की जान को बचाया उसने मानो पूरी इंसानियत को नई ज़िन्दगी बख्शी | (क़ुरान सूरह अलमायदह, 23)

इसके अतिरिक्त क़ुरान में ही कहा गया है –

इन्नल लाहा लायूहिब्बुल मुफ़सिदीन

अर्थात अल्लाह झगड़ा करने वालों तथा अशांति उत्पन्न करने वालों को पसंद नहीं करता | (क़ुरान सूरह अलकसस, 77)

उपर्युक्त धर्मों के शांति के सम्बन्ध में दृष्टिकोण का विश्लेषण करने के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि सभी धर्मों का उद्देश्य व्यक्ति में मानवता के गुणों का संचार कर समाज में बेहतर ढंग से जीवन यापन करने योग्य बनाना है | साथ ही धार्मिक नियमों के माध्यम से व्यक्ति में अहिंसा, प्रेम और भाई चारा के गुणों को विकसित कर शांति पूर्ण समाज स्थापित करने की कल्पना करता है |

विभिन्न धर्मों के विवेचन से एक बात तो स्पष्ट है कि मानव जीवन के लिये शांति आवश्यक है अतः इसकी शिक्षा देना मानवीय हित में है | शांति और सदभाव स्थापित करने की इस प्रक्रिया में शांति शिक्षा बहुत ही कारगर साबित हो सकती है | शांति शिक्षा का आधार समाज में अनसुलझे विवादों, हिंसा तथा विद्यार्थियों में आये भटकाव को रोकने से है (मंजू शर्मा, सामाजिक द्वंद्व एवं शांति शिक्षा) | **डॉ० मर्सी अब्राहम–** "शांति शिक्षा शांतिप्रिय लोगो के लिये

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

शिक्षा है जो कि इस पृथ्वी पर शांति कायम करने के योग्य होंगे | यह विशेषता भावात्मक शिक्षा है, यह धार्मिक शिक्षा है साथ ही स्वयं में शिक्षा है |" दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि शांति शिक्षा वह है जो अशोषित, अहिंसक, तथा न्यायप्रिय समाज का निर्माण करती है| शायद इसी को दृष्टि में रखते हुए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढाँचा (NCF) 2005 ने शांति शिक्षा के सम्बन्ध में अपने सुझाव इस प्रकार व्यक्त किये –"शांति की शिक्षा जीवन के लिये शिक्षा है और वह जीविका के लिये प्रशिक्षण मात्र नहीं है | उसका मकसद है लोगों को मूल्यों, कौशलों, और अभिवृत्तियों से लैस करना, जिससे उन्हें दूसरों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार रखने वाले पूर्ण व्यक्ति और उत्तरदायी नागरिक बनने में मदद मिले |"

वर्तमान परिदृश्य में शांति शिक्षा का जो भी स्वरूप हो उसकी आवश्यकता है और जिन्हे छात्रों तक पहुंचाने का एक माध्यम पाठ्यपुस्तक भी हो सकती है | क्योंकि पुस्तकों से संचित ज्ञान शिक्षक अपने छात्रों को देता है, इसलिए पुस्तकें ज्ञान के संचार हेतु एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में इस्तेमाल की जाती हैं | पाठ्यपुस्तक ही वह माध्यम है जिसके द्वारा विद्यार्थियों के कोरे जीवन को मूर्त दिशा देकर उनमें नवीन ऊर्जा का संचार किया जा सकता है तथा राष्ट्र निर्माण में सहायक बनाया जा सकता है| जैसा कि **टरोलिकर** ने कहा है– “पाठ्यपुस्तक ज्ञान, अनुभवों, भावनाओं, विचारों तथा प्रवृत्तियों व मूल्यों के संचय का साधन है” (सौलकी डॉ० अरविन्द, पृष्ट संख्या, 250)| आज के तकनीकी युग में जिस तरह पुस्तकों ने अपना स्थान शिक्षण प्रक्रिया में कायम रखा है, वह कहीं न कहीं इसके महत्व को ही स्पष्ट करता है |

चूँकि प्रस्तुत शोध अध्ययन में एन०सी०ई०आर०टी० की पुस्तक का चयन किया गया है अतः शांति शिक्षा के सम्बन्ध में उसके क्या दृष्टिकोण हैं यह जानना भी आवश्यक है, इसी क्रम में – एन०सी०ई०आर०टी० (NCERT) ने शांति शिक्षा को स्कूली पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग बताते हुए इसमें समानता, सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, सहिष्णुता, सांस्कृतिक विविधता जैसे विषयों को शामिल करने की सिफारिश की है | चूँकि हम अभूतपूर्व हिंसा के दौर में जी रहे हैं जिसमे असहिष्णुता, कट्टरवाद, तथा आपसी विवाद का समाज में बोलबाला होने के कारण कल्याणकारी कार्यों में बाधा उत्पन्न हो रही है | अतः बढ़ती हुई हिंसा के चलते स्कूली पाठ्यक्रम के ढाँचे में शांति शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिए जाने ज़रूरत है | (सुषमा गुलाटी डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन साइकोलॉजी एंड फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन की प्रमुख)

Copyright © 2020 Authors

मानव में शांति के गुणों का समावेश करने के लिये विद्यालय की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता, और न ही विद्यालयी पाठ्यक्रम में मुद्रित पाठ्यपुस्तकों को ।अतः पाठ्यपुस्तकों में ऐसे अध्यायों का समावेश किया जाए जो बालको में शांति व धैर्य का विकास करने में कारगर साबित हो सके ।

2. शोध अध्ययन का औचित्य एवं उद्देश्य

कोई भी अनुसंधान कार्य इसलिए किया जाता है कि वह अपनी उपयोगिता एवं महत्व को स्पष्ट करे, साथ ही वर्तमान शैक्षिक जगत इससे कितना लाभान्वित होगा यह भी स्पष्ट करे| वर्तमान परिस्थिति में यह पता लगाया जाना आवश्यक है कि एक पाठ्यपुस्तक किस तरह शांति को स्थापित करने में सहयोग करती है| प्रस्तुत शोध अध्ययन आठवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक के पाठ्य विश्लेषण पर आधारित है| अध्ययन हेतु सामाजिक विज्ञान विषय को चुनने का मुख्य उद्देश्य यह रहा है कि यह विषय अनिवार्य रूप से माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के सभी संकायों के छात्रों को पढ़ाया जाता है| शोध का मुख्य उद्देश्य आठवीं कक्षा की सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक में सम्मलित उन तत्वों का पता लगाना है जो शांति को स्थापित करने में सहायक साबित होते हैं ।

3. कार्य प्रणाली

शांति तत्वों को खोजने हेतु पाठ्यपुस्तक का चयन किया जाना भी एक महत्वपूर्ण उपक्रम रहा। अध्ययन के लिये नमूने के रूप में एन०सी०ई०आर०टी० की आठवीं कक्षा की सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक ली गई| गुणात्मक अनुसंधान विधि में प्रयुक्त प्रकरण विश्लेषण तकनीकी का प्रयोग किया गया|

4. पुस्तक का विश्लेषण

पुस्तक के पृष्ट भाग पर पुस्तक का शीर्षक सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन–3 मुद्रित है जो कक्षा आठ के विद्यार्थियों के लिए है, इसके अगले पृष्ट पर प्रथम संस्करण से लेकर वर्तमान संस्करण की तिथियाँ अंकित है । पुस्तक का प्रथम संस्करण अप्रैल 2008 में वहीं नवीन संस्करण 2018 में किया गया है ।इसी पृष्ट पर पुस्तक प्रकाशन में सहयोग देने वाले व्यक्तियों की चर्चा है ।

Copyright © 2020 Authors

पुस्तक के अगले पृष्ठ पर एन०सी०ई०आर०टी० के निदेशक के द्वारा आमुख स्पष्ट किया गया है जिसमे उन्होंने कहा यदि बच्चों को उचित वातावरण, उचित स्थान तथा आजादी दी जाये तो वह पुस्तक में दी गयी सामग्री को अपनी सूझबूझ के द्वारा नये ज्ञान में सृजित कर सकते हैं | साथ ही बच्चो की कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और अनुभव करने का अवसर प्रदान करते हैं | इसलिए स्कूलों को मुख्य भूमिका में लाना ज़रूरी है |

इसके बाद के पृष्ठों पर पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के अध्यक्ष तथा सदस्यों के नाम उल्लेखित हैं | इसके बाद के पृष्ठ पर एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा उन सभी संस्थानों तथा व्यक्तियों के प्रति आभार प्रकट किया गया है जिन्होंने पाठ्यपुस्तक तैयार करने में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में मदद की है | इसके अतिरिक्त पुस्तक में प्रयुक्त चित्रकथा-पट्ट, चित्रों,पोस्टरों तथा अंत में प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया है |

अध्याय प्रारम्भ होने से पूर्व के कुछ पृष्ठों पर शिक्षकों के लिये आरम्भिक टिप्पणियाँ वर्णित की गयी हैं ताकि पुस्तक के अध्यायों में उठायी जा रही अवधारणाओं से शिक्षकों को अवगत कराया जा सके ताकि उन्हें पढ़ाने में किसी भी तरह की समस्या उत्पन्न न हो | इसके अतिरिक्त चूँकि प्रस्तुत पुस्तक सामाजिक विज्ञान का तीसरा और अंतिम भाग है, अतः इसमें पूर्व की दो पुस्तकों के अध्यायों से भी शिक्षकों को परिचित कराया गया है |

- **अध्याय वार पुस्तक का विश्लेषण**

प्रथम अध्याय जिसका शीर्षक "भारतीय संविधान" है इस पाठ में भारत की सम्प्रभुता एवं अखण्डता को बनाये रखने के लिये भारतीय नागरिको के लिए संविधान का निर्माण किया गया है जिसमे नागरिको के अधिकारों के साथ-साथ संघवाद, संसदीय शासन पद्धति, केंद्र और राज्यों की बीच शक्तियों का विभाजन, मौलिक अधिकार (जिसमें समानता,स्वतंत्रता, शोषण के विरुद्ध अधिकार,धार्मिक स्वतंत्रता, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक तथा संवैधानिक उपचार का अधिकार) तथा धर्मनिरपेक्षता का वर्णन है |

दूसरा अध्याय जिसका शीर्षक "धर्मनिरपेक्षता की समझ" है प्रस्तुत पाठ में यह उद्घोषित किया गया है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है अर्थात राज्य का कोई धर्म नहीं है तथा यहां पर निवास करने वाले नागरिकों को अपनी इच्छानुरूप किसी भी धर्म को चुनने की, पालन करने की तथा शांति पूर्ण ढंग से प्रचार

 Copyright © 2020 Authors

 ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

प्रसार करने का अधिकार है |तथा धर्म के आधार पर किसी भी व्यक्ति के साथ किसी भी तरह का भेद भाव नहीं किया जाएगा |

तीसरा अध्याय का शीर्षक "हमें संसद क्यों चाहिये" है प्रस्तुत पाठ में यह स्पष्ट किया गया है कि किस तरह हमारी संसद देश के नागरिकों को निर्णय प्रक्रिया में हिस्सा लेने और देश की शासन व्यवस्था को सही ढंग से चलाने में सहायता करती है, साथ ही कानून निर्माण कार्य भी यही होता है |

चौथा अध्याय का शीर्षक "कानूनों की समझ" है प्रस्तुत पाठ से यह स्पष्ट होता है कि हमारा कानून धर्म,जाति,और लिंग के आधार पर लोगों के साथ कोई भेदभाव नहीं करता | अर्थात सभी नागरिकों पर समान रूप से लागू होते हैं तथा कानून के ऊपर कोई व्यक्ति नहीं है |कानूनों की समझ का ही परिणाम होता है जिससे घरेलू हिंसा तथा समाज में होने वाले अपराधों में कमी आती है तथा नागरिक शांति पूर्ण ढंग से जीवन व्यतीत करते हैं |

पाँचवा अध्याय का शीर्षक "न्यायपालिका" है जो किसी भी तरह के अमानवीय कृत्य के खिलाफ न्याय करने का काम करती है तथा शासन व्यवस्था को समान रूप संचालित करने में सहायता करती है | यह न केवल विवादों का निपटारा करती है बल्कि मौलिक अधिकारों का सही ढंग से क्रियान्वयन करने में भी सहायता करती है साथ ही शांति भंग करने वाले उन सभी कृत्यों पर रोक लगाने का काम करती है जिससे समाज में अव्यवस्था फ़ैल सकती है|

छठा अध्याय जिसका शीर्षक "हमारी अपराधिक न्याय प्रणाली" है प्रस्तुत पाठ में यह स्पष्ट किया गया है कि अपराध तथा अपराधी के विरुद्ध किस तरह से न्याय की गुहार लगाई जाती है तथा न्याय प्रक्रिया हेतु किन किन चरणों से गुजरना होता है और अन्ततः न्याय की प्राप्ति होती है तथा अपराधी को उसके किये गये अपराध की सजा मिलती है |

सातवाँ अध्याय का शीर्षक "हाशियाकरण की समझ" है प्रस्तुत पाठ में यह जानने को मिला कि हमारा संविधान किस तरह से धार्मिक और भाषायी अल्पसंख्यकों को सुरक्षा प्रदान करता है तथा सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक विभिन्नता के बावजूद भी सभी नागरिकों को समान अधिकार प्रदान करता है | प्रस्तुत पाठ में सच्चर कमेटी की उस रिपोर्ट का भी वर्णन है जिसमें मुस्लिम समुदायों के पिछड़े होने के कारणों आभाव, पूर्वाग्रह, और शक्तिहीनता को उत्तरदायी

 Copyright ⓒ 2020 Authors

माना गया है |जिससे वह असमानता व भेदभाव के पूर्वाग्रह में लिप्त हो जाते हैं |

आठवाँ अध्याय का शीर्षक "हाशियाकरण से निपटना" है प्रस्तुत पाठ का सम्बन्ध पूर्व पाठ से जुड़ा हुआ है |आज हमारे देश के आदिवासी, दलित,मुसलमान,औरतें तथा अन्य हाशियाई समूह यह दलील देते हैं कि लोकतान्त्रिक देश का नागरिक होने के नाते उन्हें बराबर के अधिकार मिलने चाहिये | यद्यपि यह भी सत्य है कि हमारा संविधान बहुत से ऐसे अधिकार नागरिकों को देता है जिससे असमानता का अंत होता दिखाई देता है जिसका उदहारण संविधान के अनुच्छेद 15 और 17 है जो सभी तरह के भेदभाव तथा अश्पृश्यता जैसी कुप्रथा के अंत करने की बात करता है |

नौवाँ अध्याय का शीर्षक "जनसुविधाएँ" है प्रस्तुत पाठ का सम्बन्ध मुलभूत सुविधाओ से है इसमें यह बताने की कोशिश की गई है कि सभी प्राकृतिक संसाधनों पर सबका समान रूप से अधिकार है |अतः सरकार का यह दायित्व है कि वह अपने नागरिकों को मुलभुत जनसुविधाएँ जैसे रोटी,पानी,स्वास्थ्य,शिक्षा आदि उपलब्ध कराये क्योंकि इन सुविधाओं को जीवन का अधिकार माना गया है |

अंतिम अध्याय का शीर्षक "कानून और सामाजिक न्याय" है इस पाठ के माध्यम से यह बताने की कोशिश की गई है कि व्यक्ति का जीवन समान होता है चाहे वह किसी भी वर्ग और समुदाय का नागरिक हो |तथा सभी के समान कार्य अधिकार हैं, समान जीवन यापन का अधिकार है अतः किसी भी के साथ किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जा सकता है |पाठ में भोपाल गैस त्रासदी की उस घटना का वर्णन किया गया है जिसमें सुरक्षा मानकों को किस तरह ताक पे रखते हुए मानव जीवन को ख़तरे में डालते हुए फैक्ट्री कार्य कर रही थी |तथा घटना के पश्चात भी जिस तरह का व्यवहार किया गया वह वास्तव में सामाजिक न्याय को खण्डित करने तथा मानवता का मजाक उड़ाने से कम न था |

उपर्युक्त पुस्तक के विश्लेषण से जो तत्व जैसे समानता, स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता, नैतिकता, अहिंसा, सामाजिक अधिकार, सामाजिक न्याय, धार्मिक स्वतंत्रता आदि जो सामने आये हैं वे सभी प्रत्यक्ष या परोक्ष से शांति स्थापित करने वाले मूल्य हैं | और ये सत्य है कि ये सभी गुण विद्यालय में रहते हुए यदि छात्रों में विकसित

Copyright ⓒ 2020 Authors

कर दिए जाये तो निश्चय ही हम एक ऐसे समाज की कल्पना कर सकते हैं जहाँ का वातावरण सुखमय एवं शांतिमय होगा | अतः पुस्तक विश्लेषण से प्राप्त सभी तत्व मानव में ऐसे गुणों का सृजन करते हैं जो उन्हें शांति की ओर उन्मुख करते हैं |

5. निष्कर्ष

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा उसमें सामाजिक एवं धार्मिक गुणों का विकास पारिवारिक वातावरण से प्राप्त होता है और यही गुण उसे शांति पूर्ण जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देता है | इसके अतिरिक्त जब मनुष्य समाज के संपर्क में आता है तो वहाँ भी उसे ऐसे ही वातावरण की आवश्यकता होती है जिससे वह समाज के अन्य लोगो के साथ शांतिपूर्ण ढंग से सामंजस्य स्थापित कर सके | मनुष्य में ये गुण स्थापित करने का काम विद्यालय करता है जिसे लघु समाज की संज्ञा दी जाती है | तथा यह माना जाता है कि विद्यालय और समाज मिलकर ही व्यक्ति में ऐसे गुणों का संचार करता है जिससे वह शांतिपूर्ण जीवन व्यातीत करता है | अतः ऐसी स्थिति में विद्यालय की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता और न ही विद्यालयी पाठ्यक्रम को अनदेखा किया जा सकता है | प्रस्तुत शोध में चयन की गयी कक्षा 8 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण करने के पश्चात तो यही स्पष्ट होता है कि पुस्तक में सम्मलित तत्व छात्रों में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से शांति के गुण स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करते हैं | विश्लेषण पश्चात जो गुण अर्थात स्वतंत्रता, समानता,भ्रातत्व भाव,अधिकार, सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता, नैतिकता, अहिंसा, धार्मिक स्वतंत्रता आदि सभी छात्रों में शांति के गुणों का समावेश करने वाले हैं | अतः विद्यालयी पाठ्यक्रम में प्रचलित इस पुस्तक की अवहेलना नहीं की जा सकती क्योंकि पुस्तक में मौजूद तत्व शांति को स्थापित करने में सहयोग देने वाले हैं | तथा बच्चों में शांति व धैर्य स्थापित करने में यह पुस्तक बहुत ही मूल्यवान साबित हो सकती है |

सन्दर्भ

- एन०सी०ई०आर०टी०, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढाँचा, 2005 एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली |

Copyright ⓒ 2020 Authors

- आचार्य नेमिचन्द्र (2013), द्रव्य संग्रह, विकल्प प्रिन्टर्स, आई०एस०बी०एन० 81-903639-5-6 |
- क़ुरान, सूरह अलकसस, आयत 77 |
- क़ुरान, सूरह अलमायदह, आयत 23 |
- दोसी, प्रवीण, 2011. शांति शिक्षा के माध्यम से सामाजिक एकता, अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन,शांति शिक्षा द्वारा सामाजिक समरसता, उदयपुर 26-27 मार्च 2011|
- बौद्ध संग्रह, पाली ग्रन्थ थरावद्दीन धम्मपद पाठ का पाँचवा पद,423वा छंद) |
- बौद्ध संग्रह दे० महावग्ग,23 |
- राधाकृष्णन, एस० 1990. उपनिषदों का सन्देश राजपाल एंड संस, दिल्ली|
- वृहदारयणयक उपनिषद |
- सोलंकी डी० अरविन्द, हंसराज बिश्नोई बहीखाता शिक्षण, अरिहंत शिक्षा प्रकाशन जयपुर पृष्ट संख्या 250 |
- Hicks, D., 1985. Education for Peace: Issues, dilemmas and Alternatives. Lancaster: St. Martin College.
- https://hi.Wikipedia.org/wiki/ जैन धर्म |
- http://bharat discover.org/India/ बुद्ध की शिक्षा |
- https://hi.m. wikipedia.org/wiki/ विश्व शांति |

 Copyright ⓒ 2020 Authors